बहुलवाद (Pluralism)

*** डा0 सत्या मिश्रा**

जब किसी भी समाज में एक से अधिक संस्कृतियों के व्यक्ति एवं समूह साथ-साथ रहते हैं तथा उनके इस प्रकार के सह-अस्तित्व का समर्थन भी किया जाता है तो इसे बहुलवाद अथवा सांस्कृतिक बहुलवाद के नाम से जाना जाता है। किसी सामाजिक, आर्थिक अथवा राजनीतिक इकाई के अन्तर्गत यदि अनेक उप व्यवस्थाओं की उपस्थिति हो तो यह बहुलवाद है। किसी राजनीतिक इकाई, राष्ट्र, राज्य में जातीय, वर्गीय, नस्लीय, भाषाई एवं धार्मिक बहुलवाद संभव है।

सांस्कृतिक बहुलवाद में विभिन्न समूह अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक विशेषताओं, प्रतिमानों, उपव्यवस्थाओं एवं संस्थाओं को बनाये रखते हैं। इन विशिष्ट विशिष्टताओं यथा क्षेत्र, धर्म, भाषा, जाति एवं प्रजाति की सीमाओं को खत्म नहीं किया जाता वरन् उन्हे उपने दायरे में फलने-फूलने दिया जाता है। बहुलवाद की अवधारणा इस विश्वास पर आधारित है कि विभिन्न समूह अपनी विभिन्नताओं को स्वीकार करते हुए सह-अस्तित्व के साथ एक राष्ट्र अथवा राज्य में एक साथ रह सकते हैं तथा राष्ट्रीय विकास एवं समृद्धि में सकारात्मक योगदान कर सकते हैं। बहुलवाद के दो प्रमुख आयाम हैं:-

(1) सहिष्णुता।

(2) विभिन्न समूहों के बीच सकारात्मक व अच्छे संबंध।

समाज वैज्ञानिकों ने बहुलवाद की निम्नांकित विशेषतायें चिन्हित की हैं:-

1- बहुलवादी समाज वे समाज हैं जहाँ एक राजनीतिक व्यवस्था की सीमा के भीतर अनेक सांस्कृतिक समूह एक साथ निवास करते हैं।

2- सह- अस्तित्व की भावना पाई जाती है।

3- विभिन्न सामाजिक/सांस्कृतिक समूह साझा आर्थिक व्यवस्था में सहभागी बनते हैं।

4- विभिन्न सामाजिक/सांस्कृतिक समूहों के मध्य पारस्परिक निर्भरता पाई जाती है।

5- प्रत्येक सामाजिक अथवा सांस्कृतिक समूह अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान को बनाये रखते हैं।

6- प्रत्येक सामाजिक- सांस्कृतिक समूह की निजी स्वायत्तता बरकरार रहती है।

स्पष्ट है कि भारत एक बहुलवादी समाज का उत्तम उदाहरण है। जहाँ धार्मिक, भाषाई, जनजातीय, जातीय, प्रजातीय, भौगोलिक अथवा क्षेत्रीय बहुलता अथवा विविधिताएँ गहन रूप से विद्यमान हैं। बहुलवादी समाजों मे यद्यपि समानता एवं एकता के विचार पाये जाते हैं तथापि अनेक सांस्कृतिक- उपसांस्कृतिक समूह गहन असमानताओं को भी जन्म देते हैं जिससे उप-राष्ट्रवादी एवं अनेक नृजातीय का यदा-कदा उदय होता रहता है और एकता तथा समानता खण्डित होती रहती है। भारतीय समाज की विविधता को दृष्टिगत रखते हुए एस0 सी0 दुबे ने 'Multi Tredition' (बहु परंपरा) की अवधारणा प्रतिपादित की है और दुबे ने छः प्रकार की परम्परायें बतायी हैं जिनके द्वारा भारत जैसे बहुलवादी समाज का अध्ययन किया जाना चाहिए।

एस0 सी0 दुबे ने अपनी पुस्तक 'भारतीय समाज' में बहुलता के कुछ स्त्रोत चिन्हित किये हैं यथा- नृजातीय (एथनिक) मूल, धर्म, भाषायें एवं विशेष समुदायों तथा क्षेत्रों की सांस्कृतिक पहचान।

<u>संदर्भ ग्रंथ सूची-</u>

1- रावत, हरिकृष्ण, 2007, उच्चतर समाजशास्त्र विश्वकोश, रावत पब्लिकेशंस, जयपुर।

2- दुबे, श्यामाचरण, 2001, (अनु0 वंदना मिश्र) भारतीय समाज, नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया।

3- हसनैन, नदीम, 2004, समकालीन भारतीय समाज एक समाज शास्त्रीय परिदृश्य, भारत बुक सेंटर, लखनऊ।

*** (एसोसिएट प्रोफेसर- समाजशास्त्र नारी शिक्षा निकेतन पी0जी0, कॉलेज, लखनऊ)**